अंजाम ए मुहब्बत

"काव्य संवाद"

डॉ. दीपेंद्र कुमार

एक अधूरी मोहब्बत की पूरी कहानी

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Dr. Deepender Kumar 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-727-8

Cover design: Anuj
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: May 2026

परिचय

यह किताब एक छोटे से संवाद पर आधारित है, जो लोगों की काल्पनिक मानसिकताओं की सीमा के कारण, केवल एक कल्पना मात्र शेष है।

जब ध्यान मे पहुंच चुके एक 'मन' ने पास बैठे 'दो मनों' के भावों को महसूस किया, तो लगा यहाँ कुछ विशेष है।

इसे जानने के लिए वह 'मन' ध्यान की अगली अवस्था में पहुंचा तो पाया की वे मन आपस मे लड़ रहे थे,

कभी वे खुद ही खुद से लड़ते,

तो कभी एक दूसरे के दुख से लड़ते, जब सुना तो लगा, वह क्रोध है,

जब समझा तो पाया कि वह प्रेम है, उनके प्रेम मे थोड़ा क्रोध था और क्रोध मे थोड़ा सा प्रेम,

उस 'मन' को भी ना समझ आया

कि उसने महसूस किया प्रेम, या केवल क्रोध को सुना,

इसलिए फैसला आप पर छोड़ते हुए, यह किताब लिखने का रास्ता चुना।

अगर हंसी आए तो खुल के खिलखिलाइएगा,

अगर आँए आँसू फिर भी मुस्कुराइएगा,

एक-एक पन्ना…बस पलटते जाईएगा,

कुछ खास लिखा है, बताता हूँ,

जरा गौर फरमाईएगा…

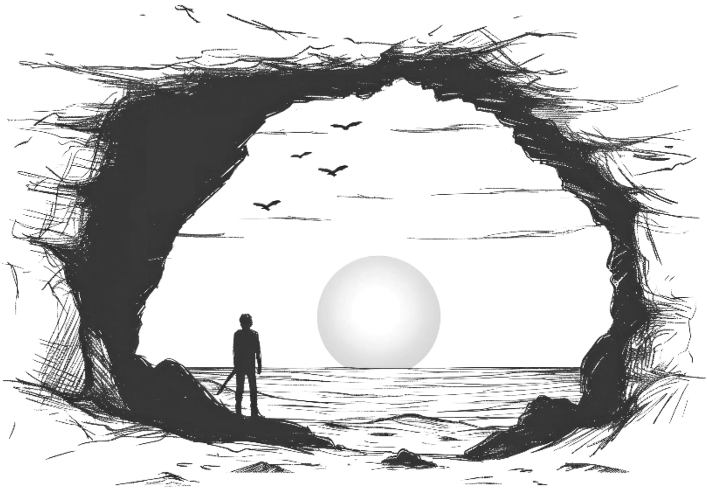

एक शेर होता है, एक शायरी होती है,

यहाँ शेर, शायरी, कविता, कहानी,

सब एक साथ कहने की कोशिश की गई है,

अब पता नहीं ये करना, गलत है या सही है,

कुछ बाते हैं इसमें बहुत पुरानी और कुछ बिल्कुल नई हैं,

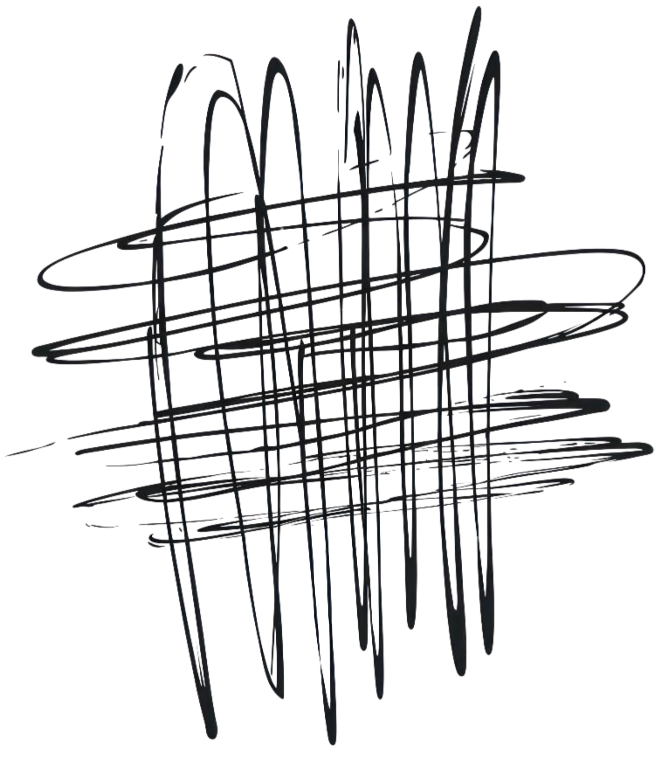

शेर-शायरी-कविता-कहानी ये तो महज 'नाम' हैं,

असल में तो ये कुछ बातें हैं,
जो "दिल ने दिल से" कही हैं।

अब बात छिड़ी है दिल की,
तो इस दिल के बारे भी कुछ बतला देता हूँ,

जितना मैं समझा हूँ, चलो आज तुमको भी समझा देता हूँ।

अनुक्रमणिका

दिल 3

अजीब-सा-एहसास 9

शायद 17

अंजाम ए मुहब्बत 25

एक झूठ 33

गलत कौन ? 40

दिल

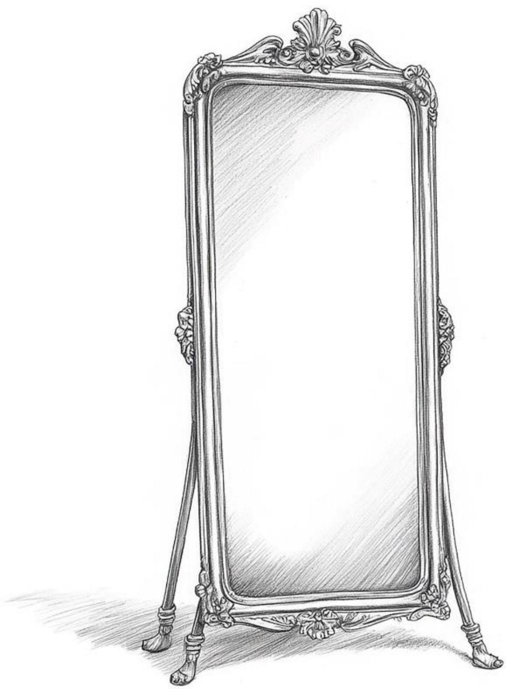

क्या है दिल ?

दिल इजाजत,

दिल इबादत,

दिल बगावत मुहब्बत की।

दिल है शीशा,

दिल है पत्थर,

दिल इमारत मुहब्बत की।

कुछ लोगों का दिल के लिए नजरिया कुछ ऐसा भी है कि

दिल बना दे आवारा,
दिल बना दे बेचारा,
दिल बना दे किस्मत का मारा,

बस

दिल लगाने की जरूरत है,
फिर दिल चाहे हमारा हो या तुमहारा ॥

दिल की हकीकत !

और फिर कोई कहता है,
दिल है पागल,
दिल है दीवाना - अनजाना,
कोई कहता है इसे खुशियों का खजाना,

पर

अब तक कोई ना मिला जिसने इस दिल की हकीकत को पहचाना।

अजीब-सा-एहसास

बात पुराने इक दिन की,

था काफी उदास मैं,

था मैं तलाश में,

कुछ पाने की आस में,

पूरे होश-ओ-हवास में,

पर एक "अजीब से एहसास" में,

लिए एक सवाल अपने पास में,

कि

क्या हो,
जो हो कोई,

जो समझे मेरी हर बात को,
हर बात के जज्बात को,

जो समझे मेरी खिलती हुई मुस्कुराहट को,
और कभी-कभी उस मुस्कुराहट के पीछे की घबराहट को,
क्या हो जो वो समझे मेरी हर बात को,
जज्बात को
और

इस 'अजीब से एहसास' को ॥

अब,

अब बात आज के दिन की है,

अब पूरी हुई तलाश है,

जिसकी थी आस,

वो भी आज पास है,

पूरे होश-ओ-हवास में,
आज फिर एक ‘अजीब सा एहसास’ है,

फिर से सवाल एक पास है
कि,

क्या हो अगर इक दिन,

वो ना समझे मेरी किसी बात को,

ना बात को,

ना बात के जज्बात को,

क्या हो अगर वो देखें सिर्फ चेहरे की मुस्कराहट,

जरा भी ना समझें पीछे की घबराहट,

क्या हो अगर एक दिन वो बदल जाएं

और ये दिल फिर से यही दोहराए,

की,

हूँ मैं तलाश में,
कुछ पाने की आस में,
और

एक ‘अजीब से एहसास’ में।

शायद

अजीब से एहसास में,
मैं था, मैं हूँ,
आगे शायद रहूँ ना रहूँ।

मैं कहता था,
मैं कहता हूँ,
आगे शायद मैं ना कहूँ।

तुझमें ही गुम रहता था,
रहता हूँ,
आगे शायद अब ना रहूँ।

मैं सहता था,
मैं सहता हूँ,
आगे शायद अब ना सहूँ।

मैं सुनता था,
मैं सुनता हूँ,
आगे शायद अब ना सुनूं।

ख्वाबों से हकीकत चुनता था,
आगे शायद अब ना चुनू।

तुझपे जो अबतक मरता था,
आगे शायद अब ना मरूं।

मैं प्यार जो तुझसे करता था,
आगे शायद अब ना करूं।

जा खुश रहना तू जीवन में,
मैं तेरी बाधा ना बनू।

तू राह चुन खुशी से अपनी
और मैं अपनी राह चुनू।

जैसा तू चाहती थी शायद वैसा मैं ना बुनूं,
और
चाहता हूँ कि वैसा ना बनूं,
क्योंकि अगर मैं वैसा बन गया,
चाहत में तेरी ढल गया,
तो मुझ में भी मुझ को,
मैं ना कभी दिख पाऊँगा,
तुझमें ही कहीं खो जाऊंगा,
कुछ अजीब सा हो जाऊंगा,
शायद,
एक गहरी नींद सो जाऊंगा।

एक गहरी नींद सो जाऊंगा।

जब सब देखेंगे लाश मेरी,

धड़कन कोई ना सुन पाएगा,

ये दिल फिर भी तुम्ही को बुलाएगा,

तुम आना,
तुम आना सुनना धड़कन मेरी,
शायद तुम्हें कुछ महसूस हो जाएगा,

सुन पाओ जो बात मेरी तो,
उस आखिरी क्षण में भी,
दिल यही दोहराएगा,

कि

था मैं तलाश में,

तुझे पाने की आस में,

और

एक "अजीब से एहसास" में ।।

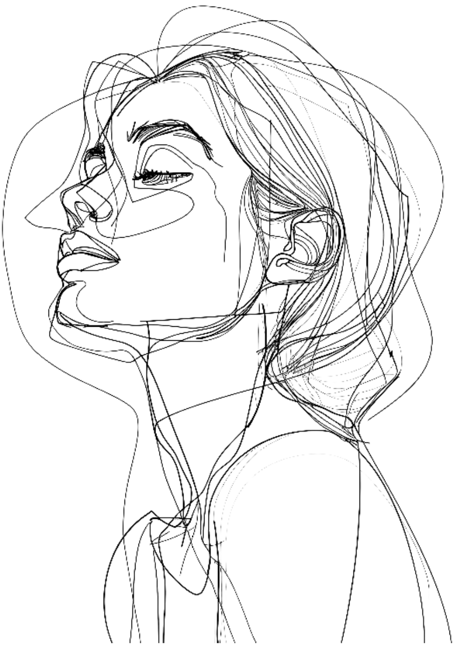

अंजाम ए मुहब्बत

हाँ आऊंगी, मैं जरूर आऊंगी,

मेरे सवालों का ज़वाब लेने,

तेरे सवालों का जवाब देने,

दिल के मलालों क़ा हिसाब लेने,

आऊंगी मैं, ज़रूर आऊंगी।

तेरे गम को चूर करने,

तेरे इस 'अजीब से एहसास' को दूर करने,

आऊंगी मैं, ज़रूर आऊंगी।

आऊंगी मैं, ज़रूर आऊंगी,
ऐसा ज़वाब देकर जाऊँगी,

जो सुनते ही,
सांसे तेरी अटक जाएंगी,
जो सुनते ही,
धड़कनें तेरी बढ़ जाएंगी,
क्या करूं क्या नहीं,
तेरी समझ भी, ना समझ पाएगी,
निकलती हुई तेरी रूह भी, वापस आना चाहेगी,
ऐसा ज़वाब देकर जाऊँगी,
तेरी लाश भी उठने पे मज़बूर हो जाएगी।

हाँ आऊंगी मैं, जरूर आऊंगी,

तेरे सारे सवालों का,
मैं ज़वाब सिर्फ़ 'एक' ही देकर जाऊँगी,
तुझे क्या लगता है,
लिखने की कला सिर्फ़ तुझे ही आती है,

आज मैं भी,
'अंजाम -ए- मुहब्बत' पर शायरी सुनाऊंगी।

तो सुन,

सोचना ना कभी दूर जाने की,
वरना इस भीड़ में खो जाऊँगी,

मत बन इतना पागल,
वरना मैं भी पागल हो जाऊँगी,

तू बात कर रहा लाश बनने की,

मुझे नहीं जानता क्या,
तेरे साथ,
जलती चिता पे भी सो जाऊँगी।

अब तो मिल गए होंगे तुझे ज़वाब,

अब तो मिट गए होंगे तेरे सवाल,

अब तो बुझ गयी होगी तेरी प्यास,

अब तो पूरी होगई होगी तेरी तलाश,

तो बता,
अब दूर हुआ कि नहीं,
तेरा वो "अजीब सा एहसास"।

एक झूठ

पूछ रही हो बुझ गयी होगी मेरी प्यास ?
मिल गए होंगे मुझे ज़वाब ?

तो सुनो,

इतनी हल्की ना थी मेरी प्यास,
कि एक घूंट मे बुझ जाये,

और
इतना साधारण ना था मेरा सवाल,
कि एक झूठ में मिट जाये,
झूठ,
हाँ सही सुना तुमने,

एक झूठ,
जो बोला तुमने,
मेरे लिए,
मेरे साथ चिता पे जलने का,
असल में तो ये प्रयास था,
मेरे सारे सवाल कुचलने का,

मरने का झूठ जीने के सच से ज्यादा आसान है,
और मरने के बाद,
भला किसे सच और झूठ की पहचान है,

तो मेरे लिए तेरा ये सच भी फ़रेब है,
अब शायद यही नसीब है,
कितनी दूर थी मुझसे 'तुम'
फ़िर भी सोचता रहा कि 'तू'
मेरे करीब है।

अगर होती मेरे पास,

तो ना खुद जलती मेरे साथ,

और ना ही मुझे जलने देती,

अरे जलता तो तब,
जब मरने देती।

तुम मेरे साथ मरने की बजाय
जीने की भी तो कह सकती थी,

जीवन रूपी दर्द का घूंट
पीने की भी तो कह सकती थी,

पर
तुमने मेरे साथ दर्द मे जीने की बजाय
मेरे साथ चैन से मरना चुना,
मुहब्बत के इस खेल में,
तुमने भी स्वार्थ का जाल बुना,
मेरी कोई फ़िक्र नहीं,
तुमने तो बस दर्द की जगह सुकून चुना।
ख़ैर,

अगर दर्द मे जीती तो मैं ही बदनाम होता,

और अब सुकून से मरना चाह रही हो,

तो भी मुझपे ही इल्ज़ाम है,

असल में,

यही ‘मुहब्बत का अंजाम’ है ॥

अब बोलो कैसे बुझ गयी होगी मेरी प्यास,

कैसे मिल गए होंगे मुझे जवाब,

कैसे दूर हुआ होगा मेरा अजीब सा एहसास,

तुमने तो कह दिया मर जाओगी मेरे साथ,

पर

अगर ‘मरना’ जवाब होता,
तो ‘जीना’ ही दुनिया का सबसे बड़ा सवाल होता।

गलत कौन ?

ये़ बातें जो दिल ने दिल से कहीं हैं,
कहनी ही ना पड़ती,

अगर इस जन्म में,
लिखी ही ना होती मुलाकात,

उसने लिख तो दी मुलाक़ात,
पर भूल गया वो लिखनी एक बात,

किताब के हर पन्ने पर कुछ और ही लिखा होता,

अगर लिखने वाले ने लिखी होती,
सारे समाज़ की एक ही जात।

TO BE CONTINUED...

EITHER HERE OR THERE